SAFINA KAUSAR

ASSISTANT PROFESSOR

DEPARTMENT OF HOME SCIENCE

ALL HAFEEZ COLLEGE ARA.

BA Undergraduate (UG)
PART III
PAPER V

TOPIC: वस्त्र का महत्व
Importance of Clothes Textiles.

(1) Clothes definition of oxford

Oxford is a typs of woven dress Shirt fabric employed to make a particular Casual-to-formal cloth in dress shirts that may be called oxford shirts.

(2) Importance of Clothes :

The importance of Clothing is to protect, Cover, make us feel attrative and help us to move around in Comfort. Clothing brings Confidence and reflects the personality of the person. It helps a human body to Survive the harsh weather Conditions.

(3) Origin of Clothing

There is no easy way to determine when Clothing was first developed Estimates by various experts have ranged from 40,000 to 3 million years ago. Some more recent studies involving the evolution of body lice have implied a more recent develop-ment with Some indicating a development of around 170,000 year ago and other indicating as little as 40,000. No Single estimate is widely accepted.

वस्त्रों का महत्व
IMPORTANCE OF TEXTILES

Introduction वस्त्र हमारी मूल आवश्यकताओं में से एक है, मानव ने जैसे ही सभ्यता के विकास की ओर अपना पहला कदम रखा तब से वह वस्त्रों के संपर्क में है। आदिकाल में मानव तन ढकने के लिये, घास, पत्ते, पेड़ की छाले, जानवरों की खालों आदि का प्रयोग किया करता था। धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ-2 मानव ने प्राकृतिक रेशो से तैयार करने की कला खोज निकाली तब से आज तक वस्त्र निर्माण कला में लगातार उन्नति एवं विकास होता जा रहा है।

(1) वस्त्रों का प्रयोग करने के विभिन्न उद्देश्य होते है जैसे ये हमारे शरीर की रक्षा करते है, शरीर के तापमान को नियंत्रित रखते है, व्यवसाय सबंधी कामों के लिये वस्त्रों का प्रयोग किया जाता है, जैसे फायरमैन, पादरी संन्यासी पुलिस पायलेट, इनकी पहचान को विशिष्ट प्रकार प्रदान करते है।

(2) वस्त्रों का उक्त लक्ष्यों की पूर्ति के अतिरिक्त दैनिक, घरेलू कार्यों मे भी महत्व होता है, जैसे फर्नीचर, बिस्तर, तौलिया झाड़न सजावटी पर्दे, बैठक अध्ययन कक्ष को सजावट आदि में भी प्रयोग किया जाता है।

(3) भोजन कक्ष, की मेज की चादर, टेबल नेपकिन, टेबल क्लॉथ रजाई, चादर, बिस्तरों, सोफाकवर तथा इन्ही प्रकार की विभिन्न चिजों में भी वस्त्रों का प्रयोग किया जाता है।

(4) वस्त्र सभ्यता, संस्कृति एवं समाजिक प्रतिष्ठा का आधार है, ये हमारी प्रतिष्ठा रक्षक, समाजिक मनोवैज्ञानिक आवश्यकता भी बन चुका है ये हमारे व्यक्तित्व का परिचायक है, हमारी संस्कृति एवं संस्कार का प्रतिक है। परिधान हमारे व्यक्तित्व में आत्म-विश्वास उत्पन्न करते है, जिससे मनुष्य का व्यक्तित्व निखरता है तथा वो समाज में लोकप्रिय बनता है जिससे व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा व उचित समाजीकरण में सहायक सिद्ध होती है।

(3) लय :→
कला का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत लय होता है इसमें, रंग, रेखा, अलंकरण ऐसा हो की दृष्टि फिसलकर एक छोर से दूसरी छोर जाये।

(4) अनुरूपता : किसी भी वस्त्र मे एकरूपता, अनुरूपता उतनी ही महत्वपूर्ण होती है जितनी आवश्यकता संगीत तथा सजावट मे प्राय: देखी जाती है। शरीर की प्राकृतिक रेखाओं के सौंदर्य को उभारने मे सहयोग स्पष्ट रूप से परिलक्षित होना चाहिये।

(5) आकर्षण केन्द्र : परिधान चयन मे आवृत भागों अथवा अलंकरण तथा सह अलंकरणों का चयन करना चाहिये साथ सुविधाजनक अच्छा नमूना होना चाहिये, जिसमे बटन, फर गोट, पाइपिन झालर द्वारा आकर्षण का केन्द्रबिन्दु बनाया जा सकता है।

* Goldstone : Harmony means unity or a single idea or impression that is it produces and impression of humans of unity through the selection and arrangement of consistant objects and idea which have a strong family resemblance and which combines to create a integrated and beautiful effect.

* मनोवैज्ञानिक सिद्धांत

(1) ये दो प्रकार के है। (1) मोडेस्टी जिसमे कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना था की शरीर को ढकने की इच्छा मनुष्य मे तब उत्पन्न हुई जब उसे शर्म का अनुभव हुआ

(2) इनमोडेस्टी सिद्धांत : इसके अनुसार मनुष्य शर्म के लिये नही बल्कि अपने अंगों को ढककर दूसरो को आकर्षित करना पसंद करता है।

Classification of Clothes :

(i) To Sum up, Clouthes Can be classified by the occasions When people Should wear them. There are clothes for informal and formal, Social occasions clothes, work clothes and sport clothes. The clothes classification helps people to decide What kind of clothes they shold were in evenry occasion.

(ii) कपड़ो के सिद्धांत :→
किसी भी परिधान की रचना एवं संयोजन ऐसा होना चाहिये जो शरीर के ढांचे के प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ा कर दिखाए, ऐसे परिधान जो प्राकृतिक समानुपात को सुन्दरता दिखाने में सहायक होते हैं। सदैव ही पसंद किये जाते हैं।

(iii) इसके बनावट के रूप में निम्नलिखित सिद्धांत हैं। :→

(क) संतुलन
(ख) अनुपात
(ग) लय
(घ) अनुरूपता
5. आकर्षण केन्द्र

(1) संतुलन : प्रायः वस्त्र की मध्यरेखा से इसे देखा जाता है दोनों हिस्सों में समान सन्तुलन बनाने से दोनों तरफ समान आकर्षण रहता है।

(2) अनुपात : एक ही वस्त्र के विभिन्न भागों में आपसी संबंध फैशन के साथ वस्त्र रचना में शरीर के आकार का अनुपात रखना चाहिये रंग, दूरी, माप को परिधान रचना के अनुसार ही सुनिश्चित करना चाहिये।

Importance of textiles

(1) Textile is a waven of machine knitted fabric. and the Study of fibres, yarn, Construction of fabries and finishes. for just like Example (1) Cotton. wool. Silk. linen. and Uses of textile: There are three major ways textiles are Used for. (1) Apparel textiles. (2) Home textiles. (3) Industrial textiles.

(2) प्रायोजन वस्त्रों का प्रयोजन क्या होता है। वस्त्रों का चयन करते समय उसकी उपयोगिता एवं महत्व को ध्यान मे रखना ही प्रायोजन कहलाता है। अत: वस्त्रों की विशेषताओं को जानना गृहणी को जरूरी होता है। जिसमे रेशों के गुण, रंग, डिजाइन, मौसम की अनुकूलता उसके गुणों अवगुणों को ध्यान मे रख कर ही वस्त्रों का चयन करना महत्वपूर्ण होता है। वस्त्रों की बनावट, उसका लचिलापन, टिकाऊपन सुन्दरता एवं आकर्षणता महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वस्त्रों की कार्यक्षमता, रख रखाव, साज-संभाल, संचयन, संरक्षण दाग धब्बे छुड़ाने की विधियाँ वस्त्रों की कार्यक्षमता को बढ़ाने मे सहायक सिद्ध होते है। जिसकी जानकारी रखना महत्वपूर्ण हो जाता है।
अत: किसी भी वस्त्रों के चयन मे प्रमुख कारकों का ध्यान रखना ही चाहिये जिसमे रहने का स्थान, लिंग, आयु, आय, ऋतु, फैशन अवसर, व्यावसाय, अलंकरण व्यक्तिविशेष का महत्व है।

Thank you

19.4.2020

Safina Khan